॥ १० - कमला महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ कमला

कमला यन्त्र

॥ देवी कमला ॥

देवी कमला दसमहाविद्या में दसवीं महाविद्या हैं। श्रीमद्भागवत के आठवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में कमला के उद्भव की विस्तृत कथा आयी है। देवताओं एवं असुरों के द्वारा अमृत-प्राप्ति के उद्देश्य से किये गये समुद्र-मन्थन के फल-स्वरूप इनका प्रादुर्भाव हुआ था। इन्होंने भगवान् विष्णु को पतिरूप में वरण किया था। भगवती कमला वैष्णवी शक्ति हैं तथा भगवान् विष्णु की लीलासहचरी हैं। ये एक रूप में समस्त भौतिक या प्राकृतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं और दूसरे रूप में सच्चिदानन्दमयी लक्ष्मी हैं; जो भगवान् विष्णु से अभिन्न हैं। देवता, मानव एवं दानव-सभी इनकी कृपा के बिना पङ्गु हैं। इसलिये आगम और निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, सिद्ध और गन्धर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिये लालायित रहते हैं।

महाविद्या कमला के ध्यान में बताया गया है कि इनकी कान्ति सुवर्ण के समान है। हिमालय के सदृश श्वेत वर्ण के चार हाथी अपने सूड में चार सुवर्ण कलश लेकर इन्हें स्नान करा रहे हैं। ये अपनी दो भुजाओं में वर एवं अभय मुद्रा तथा दो भजाओं में दो कमल पष्प धारण की हैं। इनके सिरपर सुन्दर किरीट तथा तनपर रेशमी परिधान सुशोभित है। ये कमल के सुन्दर आसन पर आसीन हैं।

भगवान् आद्य शंकराचार्य के द्वारा विरचित कनकधारा स्तोत्र और श्रीसूक्तका पाठ, कमलगट्टों की मालापर श्रीमन्त्र का जप, बिल्वपत्र तथा बिल्वफल के हवन से कमला की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

वाराहीतन्त्र के अनुसार प्राचीनकाल में ब्रह्मा, विष्ण तथा शिव द्वारा पूजित होने के कारण कमला का एक नाम त्रिपुरा प्रसिद्ध हुआ। कालिका पुराण में कहा गया है कि त्रिपुर शिव की भार्या होने से इन्हें त्रिपुरा कहा जाता है। शिव अपनी इच्छा से त्रिधा हो गये। उनका ऊर्ध्व भाग गौरवर्ण, चार भुजावाला, चतुर्मुख ब्रह्मरूप कहलाया। मध्य भाग नीलवर्ण, एकमुख और चतुर्भुज विष्णु कहलाया तथा अधोभाग स्फटिक वर्ण, पञ्चमुख और चतुर्भुज शिव कहलाया। इन तीनों शरीरों के योग से शिव त्रिपुर और उनकी शक्ति त्रिपुरा कही जाती है।

भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में इनके रूप तथा पूजा-विधान का विस्तृत वर्णन किया गया है। इनकी उपासना से समस्त सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। पुरुषसूक्तमें 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या' कहकर कमला को परम पुरुष भगवान् विष्णु की पत्नी बतलाया गया है। अश्व, रथ, हस्ति के साथ उनका सम्बन्ध राज्य-वैभवका सूचक है, पद्मस्थित होने तथा पद्मवर्णा होनेका भी संकेत श्रुति में है। भगवच्छक्ति कमला के पाँच कार्य हैं- तिरोभाव, सृष्टि, स्थिति, संहार और अनुग्रह। भगवती कमला स्वयं कहती हैं कि नित्य निर्दोष परमात्मा नारायण के सब कार्य मैं स्वयं करती हूँ। इस प्रकार काली से लेकर कमला तक दशमहाविद्याएँ सृष्टि और व्यष्टि, गति, स्थिति, विस्तार, भरण-पोषण, नियन्त्रण, जन्म-मरण, उन्नति-अवनति, बन्धन तथा मोक्ष की अवस्थाओं की प्रतीक हैं। ये अनेक होते हुए भी वस्तुतः परमात्माकी एक ही शक्ति हैं।

इनकी साधना द्वारा साधक समृद्धि, धन, नारी, पुत्रादि एवं विद्या को प्राप्त करता है। दरिद्रता, संकट, गृहकलह और अशांति को दूर करती है। व्यक्ति को यश और सम्मान की प्राप्ति होती है। भौतिक सुख की इच्छा रखने वालों के लिए इनकी अराधना सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। इस महाविद्या की साधना नदी तालाब या समुद्र में गिरने वाले जल में आकंठ डूब कर की जाती है।

- मुख्य नाम : **कमला।**
- अन्य नाम : **लक्ष्मी, नारायणी, कमलात्मिका।**
- भैरव : **श्री विष्णु।**
- भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : **मत्स्य अवतार।**
- तिथि : **कोजागरी पूर्णिमा, अश्विन मास पूर्णिमा।**
- कुल : **श्री कुल।**
- दिशा : **उत्तर-पूर्व।**
- स्वभाव : **सौम्य स्वभाव।**
- कार्य : **धन, सुख, समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी।**
- शारीरिक वर्ण : **सूर्य की कांति के समान।**
- विशेषता : **मोहविद्या, मोक्ष विद्या**

॥ कमला माता का मंत्र: ॥

- कमलगट्टे की माला से रोजाना दस या इक्कीस माला का जप करना चाहिए।
- नोट : कमला महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।

- एकाक्षरी मंत्र **श्रीं।**
  - विनियोग अस्य श्री कमला एकाक्षर मंत्रस्य भृगु ऋषि:, निवृद् छंद:, श्री लक्ष्मी देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।
  - अंगन्यास श्रां हृदयाय नम:। श्रीं शिरसे स्वाहा। श्रृं शिखाये वषट्। श्रैं कवचाय हुम। श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रं अस्त्राय फट्।

- द्वयक्षर मंत्र **स्ह् क्लीं हं।**
  - विनियोग अस्य मंत्रस्य हरि ऋषि:, गायत्री छंद:, साम्राज्यदा मोहिनी लक्ष्मी देवता, स्ह्क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिं, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।
  - षडंगन्यास श्रां, श्रीं, श्रृं, श्रैं, श्र: से करें।

- मंत्र **श्रीं क्लीं श्रीं। या श्रीं स्ह् क्ल्हीं श्रीं।**
  - इसका विनियोग तथा ध्यान द्वयक्षर मंत्र की तरह है।
  - षडंगन्यास आं, ईं, ऊं, ऐं, औं, अ: से करें।

- एकादशाक्षर मंत्र **यौं नौं नम: ऐं श्रियै श्रीं नम: (मेरुतंत्र से)**
  - विनियोग अस्य मंत्रस्य जमदग्नि ऋषि:, त्रिष्टुप छंद:, श्रीरामादेवता, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग:।
  - षड्ंगन्यास यौं नौं मौं नम: ऐं हृदयाय नम:। यौं नौं मौं नम: ऐं शिरसे स्वाहा। यौं नौं मौं नम: ऐं शिखायै वषट्। यौं नौं मौं नम: ऐं कवचाय हुम। श्रियै नम: नम: नैत्रत्रयाय वौषट्। श्रीं नम: अस्त्राय फट्।

- द्वादशाक्षर मंत्र **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौ: (ह्सौ:) जगत्प्रसूत्यै नम:।**
- मंत्र **श्री कमलायै नम:।**
- मंत्र **ॐ हसौ: जगत प्रसुत्तयै स्वाहा:।** कमलगट्टे से दस माला रोज
- मंत्र **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नम:।**
- मंत्र **ॐ नम: कमलवासिन्यै स्वाहा।**
  - 10 लाख जप करें। दशांश शहद, घी व शर्करा युक्त लाल कमलों से होम करें, तो सभी कामनाएं पूर्ण होंगी। समुद्र से गिरने वाली नदी के जल में आकंठ जप करने पर सभी प्रकार की संपदा मिलती है।

॥ कमला ध्यानम् ॥

- ध्यानम् - १

आन्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ॥
विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां ।
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

- ध्यानम् - २

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः
हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलाम्
क्षौमाबद्धनितम्बबिंबललिताम् वंदेऽरविंदस्थिताम् ॥

॥ श्री कमला स्तोत्रम् - १ ॥

- श्री शङ्कर उवाच
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम् ।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ॥ १ ॥

- गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वमन्त्रमयं साक्षाच्छृणु पर्वतनन्दिनि ॥ ॥ २ ॥

- अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपारगुणसागरी ।
अणिमादि सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ३ ॥

- आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ४ ॥

- इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमन्त्र स्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ५ ॥

- उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्युत्कण्ठाकुलनाशिनी ।
उर्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ६ ॥

- ऐरावतपतिपूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी ।
औदार्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ७ ॥

- कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी ।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ८ ॥

- कन्दर्पदमना देवि कल्याणी कमलानना ।
करुणार्णवसम्पूर्णा शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ९ ॥ **

- खञ्जनाक्षी खञ्जनासा देवि खेदविनाशिनी ।
खञ्जरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१०॥

- गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्वकुलपावनी ।
गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥११॥

- ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी ।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१२॥

- घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी ।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१३॥

- चतुर्वेदमयी चिन्त्या चित्ताचैतन्यदायिनी ।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१४॥

- चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
  चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम् ॥ ॥१५॥
- चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिदायिनी ।
  चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१६॥
- छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्यनाशिनी ।
  छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१७॥
- जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणी ।
  जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१८॥
- जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी ।
  जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥१९॥
- झिञ्जीरवस्वना देवि झञ्झावातनिवारिणी ।
  झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२०॥
- अर्थप्रदायिनीं त्वं हि त्वञ्च ठकाररूपिणी ।
  ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी ॥
  डमरूप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२१॥
- तप्तकाञ्चनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणी ।
  त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२२॥
- त्रिलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी ।
  त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२३॥
- त्रैलोक्यमङ्गला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया ।
  त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२४॥
- दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्र्यापद्विनाशिनी ।
  द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२५॥
- देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी ।
  दिव्याभरणभूषाङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२६॥
- दामोदरप्रिया त्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी ।
  दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२७॥
- ध्यानातीता धराध्यक्षा धनधान्यप्रदायिनी ।
  धर्मदा धैर्यदा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२८॥

- नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी ।
  नवयौवनचार्वङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥२९॥
- नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी ।
  नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥३०॥
- निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा ।
  निर्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥३१॥
- पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी ।
  परा शक्तिः परा भक्तिर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥३२॥
- पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्दप्रदायिनी ।
  परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥३३॥
- पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।
  पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥३४॥
- पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी ।
  प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥३५॥
- फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणिविमोहिनी ।
  फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥३६॥
- विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी ।
  विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥३७॥
- विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमन्त्र स्वरूपिणी ।
  वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥३८॥
- वेणुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी ।
  विद्युद् गौरी महादेवि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥३९॥
- भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तानुग्रहकारिणी ।
  भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४०॥
- भक्तप्रिया भागीरथी भक्तमङ्गलदायिनी ।
  भयादा भयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४१॥
- मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी ।
  मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४२॥
- महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी ।

मुखराप्राणहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽतु ते ॥ ॥४३॥

- यौवनपूर्णसौन्दर्या योगमाया तथेश्वरी ।
  युग्मश्रीफलवृक्षा च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४४॥
- युग्माङ्गदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः ।
  यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४५॥
- रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालङ्कारधारिणी ।
  राकेन्दुकोटिसौन्दर्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४६॥
- रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा ।
  राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४७॥
- लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी ।
  ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४८॥
- विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता ।
  विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥४९॥
- शुभ काञ्चनगौराङ्गी शङ्खकङ्कणधारिणी ।
  शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥५०॥
- षट्चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्यप्रदायिनी ।
  षोडशी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥५१॥
- सदानन्दमयी त्वं हि सर्वसम्पत्तिदायिनी ।
  संसारतारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥५२॥
- सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा ।
  सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥५३॥
- सर्वसङ्कटहन्त्री त्वं सत्यसत्त्वगुणान्विता ।
  सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥५४॥
- हेमाङ्गिनी हास्यमुखी हरिचित्तविमोहिनी ।
  हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥ ॥५५॥
- क्षेमङ्करी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी ।
  क्षीणमध्या च क्षेत्राङ्गी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ॥५६॥

- फलश्रुति
- शङ्कर उवाच

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तवं शुभम् ।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥ ॥५७॥

- पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी ।
  वाञ्छाकल्पलता साक्षाद्भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ॥ ॥५८॥
- इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु शृणुयात् श्रावयेदपि ।
  इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥ ॥५९॥
- इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
  तञ्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः ॥ ॥६०॥
- शृणुयाच्छ्रावयेद्यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि ।
  राजानो वशमायान्ति तं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि ॥ ॥६१॥
- तं दृष्ट्वा दुष्टसङ्घाश्च पलायन्ते दिशो दश ।
  भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसाः पन्नगादयः॥
  विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्तनात् ॥ ॥६२॥
- सुराश्च ह्यसुराश्चैव गन्धर्वकिन्नरादयः ।
  प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा ॥ ॥६३॥
- धनार्थी लभते चार्थ पुत्रार्थी च सुतं लभेत् ।
  राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥ ॥६४॥
- ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ।
  महापापोपपापञ्च तरन्ति स्तवकीर्तनात् ॥ ॥६५॥
- गद्यपद्यमयी वाणी मुखात्तस्य प्रजायते ।
  अष्टसिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात् ॥ ॥६६॥
- वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत्सुतम् ।
  पठनात्स्मरणात् सत्यं वच्मि ते गिरिनन्दिनि ॥ ॥६७॥
- भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
  भक्त्या सम्पूजयेद्यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा ॥ ॥६८॥
- धारयेद्दक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकाङ्क्षया ।
  योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वसौख्यमयी भवेत् ॥ ॥६९॥
- विषं निर्विषतां याति अग्निर्याति च शीतताम् ।
  शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥ ॥७०॥
- बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।
  वैकुण्ठे च वसेन्नित्यं सत्यं वच्मि सुरेश्वरि ॥ ॥७१॥

॥ कमला स्तोत्रम् - २ ॥

दरिद्रता, संकट, गृहकलह और अशांति को दूर करती है कमलारानी। समृद्धि, धन, नारी, पुत्रादि के लिए इनकी साधना की जाती है। इसकी पूजा करने से व्यक्ति साक्षात कुबेर के समान धनी और विद्यावान होता है। व्यक्ति का यश और व्यापार या प्रभुत्व संसांर भर में प्रचारित हो जाता है। इनकी सेवा और भक्ति से व्यक्ति सुख और समृद्धि पूर्ण रहकर शांतिमय जीवन बिताता है।

- **ओंकाररूपिणी देवि विशुद्धसत्त्वरूपिणी।**
  देवानां जननी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥ १ ॥
- **तन्मात्रंचैव भूतानि तव वक्षस्थलं स्मृतम्।**
  त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥ २ ॥
- **देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसकिन्नरः।**
  स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥ ३ ॥
- **लोकातीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता।**
  विद्वज्जनकीर्त्तिता च प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥ ४ ॥
- **परिपूर्णा सदा लक्ष्मि त्रात्री तु शरणार्थिषु।**
  विश्वाद्या विश्वकत्रीं च प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥ ५ ॥
- **ब्रह्मरूपा च सावित्री त्वद्दीप्त्या भासते जगत्।**
  विश्वरूपा वरेण्या च प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥ ६ ॥
- **क्षित्यप्तेजोमरूद्धयोमपंचभूतस्वरूपिणी।**
  बन्धादेः कारणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥ ७ ॥
- **महेशे त्वं हेमवती कमला केशवेऽपि च।**
  ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥ ८ ॥
- **चंडी दुर्गा कालिका च कौशिकी सिद्धिरूपिणी।**
  योगिनी योगगम्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥ ९ ॥
- **बाल्ये च बालिका त्वं हि यौवने युवतीति च।**
  स्थविरे वृद्धरूपा च प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥१०॥
- **गुणमयी गुणातीता आद्या विद्या सनातनी।**
  महत्तत्त्वादिसंयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि॥ ॥११॥
- **तपस्विनी तपः सिद्धि स्वर्गसिद्धिस्तदर्थिषु।**
  चिन्मयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुंदरि॥ ॥१२॥

- त्वमादिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकारणम् ।
  त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छाचारा त्वमेवहि ॥ ॥१३॥
- चराचराणां भूतानां बहिरन्तस्त्वमेव हि ।
  व्याप्यव्याकरूपेण त्वं भासि भक्तवत्सले ॥ ॥१४॥
- त्वन्मायया हृतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः ।
  गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात्सदा ॥ ॥१५॥
- तावन्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा ।
  यावन्न ज्ञायते ज्ञानं चेतसा नान्वगामिनी॥ ॥१६॥
- त्वज्ज्ञानात्तु सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु ।
  रमन्ते विषयान्सर्वानन्ते दुखप्रदान् ध्रुवम् ॥ ॥१७॥
- त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् ।
  चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥१८॥
- ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंश्रया ।
  व्यक्ताव्यक्त च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥१९॥
- अचला सर्वगा त्वं हि मायातीता महेश्वरि ।
  शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२०॥
- सर्वकायनियन्त्री च सर्व्वभूतेश्वरी ।
  अनन्ता निष्काला त्वं हि प्रसन्ना भवसुन्दरि ॥ ॥२१॥
- सर्वेश्वरी सर्ववद्या अचिन्त्या परमात्मिका ।
  भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२२॥
- ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमंगला ।
  इंद्राणी अमरावत्यामम्बिका वरूणालये ॥ ॥२४॥
- यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा ।
  महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२५॥
- नैर्ऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी ।
  पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२६॥
- सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी ।
  भद्रकाली च लंकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२७॥

- रामेश्वरी सेतुबन्धे सिंहले देवमोहिनी ।
  विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥२८॥
- कालिका त्वं कालिघाटे कामाख्या नीलपर्वत ।
  विरजा ओड्रदेशे त्वं प्रसन्ना भव सुंदरि ॥ ॥२९॥
- वाराणस्यामन्नपूर्णा अयोध्यायां महेश्वरी ।
  गयासुरी गयाधाम्नि प्रसन्ना भव सुंदरि ॥ ॥३०॥
- भद्रकाली कुरूक्षेत्रे त्वंच कात्यायनी व्रजे ।
  माहामाया द्वारकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥३१॥
- क्षुधा त्वं सर्वजीवानां वेला च सागरस्य हि ।
  महेश्वरी मथुरायां च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥३२॥
- रामस्य जानकी त्वं च शिवस्य मनमोहिनी ।
  दक्षस्य दुहिता चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥३३॥
- विष्णुभक्तिप्रदां त्वं च कंसासुरविनाशिनी ।
  रावणनाशिनां चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥ ॥३४॥
- लक्ष्मीस्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
  सर्वज्वरभयं नश्येत्सर्वव्याधिनिवारणम् ॥ ॥३५॥
- इदं स्तोत्रं महापुण्यमापदुद्धारकारणम् ।
  त्रिसंध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्सततं नरः ॥ ॥३६॥
- मुच्यते सर्व्वपापेभ्यो तथा तु सर्वसंकटात् ।
  मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ॥ ॥३७॥
- समस्तं च तथा चैकं यः पठेद्भक्तित्परः ।
  स सर्वदुष्करं तीर्त्वा लभते परमां गतिम् ॥ ॥३८॥
- सुखदं मोक्षदं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः ।
  स तु कोटीतीर्थफलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥ ॥३९॥
- एका देवी तु कमला यस्मिंस्तुष्टा भवेत्सदा ।
  तस्याऽसाध्यं तु देवेशि नास्तिकिंचिज्जगत् त्रये ॥ ॥४०॥
- पठनादपि स्तोत्रस्य किं न सिद्धयति भूतले ।
  तस्मात्स्तोत्रवरं प्रोक्तं सत्यं हि पार्वति ॥ ॥४१॥

॥ इति श्री कमला स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥ कमला (लक्ष्मी) कवचम् - १ ॥

- लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
  नारायणी शीर्षदेशे सर्वाङ्गे श्रीस्वरूपिणी ॥ ॥ १ ॥
- रामपत्नी प्रत्यङ्गे तु सदावतु रमेश्वरी ।
  विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥ ॥ २ ॥
- जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा ।
  हरिप्रिया हरिरामा जयङ्करी महोदरी ॥ ॥ ३ ॥
- कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी ।
  जयङ्करी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभङ्करी ॥ ॥ ४ ॥
- सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटवासिनी ।
  भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत् ॥ ॥ ५ ॥
- कवचन्तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः ।
  त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥ ॥ ६ ॥
- पठनं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्धनम् ।
  भीति विनाशनञ्चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥ ॥ ७ ॥
- भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
  धारणाद् गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ ॥ ८ ॥
- अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
  मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ॥ ॥ ९ ॥
- गर्भिणीं लभते पुत्रं वन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
  धारयेद्यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके ॥ ॥१०॥
- यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत् ।
  मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ॥ ॥११॥
- पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
  सर्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥ ॥१२॥
- विपदि सङ्कटे घोरे तथा च गहने वने ।
  राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
  पठनाद्धारणाद्यस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ॥ ॥१३॥

- अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयादपि ।
  सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्यं यशस्विनम् ॥ ॥१४॥
- शृणुयाद्यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्रतः ।
  सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते ॥ ॥१५॥
- मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
  रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ॥ ॥१६॥
- लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
  स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥ ॥१७॥
- शृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
  यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्ना सर्व देवताः ॥ ॥१८॥
- बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।
  आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
  धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥ ॥१९॥

॥ कमला महाविधा कवचम् - २ ॥

- विनियोग

ॐ अस्याश्चतुरक्षरा विष्णुवनितायाः कवचस्य श्रीभगवान् शिव ऋषीः। अनुष्टुप्छन्दः। वाग्भवा देवता। वाग्भवं बीजम्। लज्जा शक्तिः। रमा कीलकम्। कामबीजात्मकं कवचम्। मम सुकवित्वपाण्डित्यसमृद्धिसिद्धये पाठे विनियोगः।

- **ऐङ्कारो मस्तके पातु वाग्भवा सर्वसिद्धिदा।**
  ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी॥ ॥ १ ॥
- **जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।**
  ओष्ठाधारे दन्तपङ्क्तौ तालुमूले हनौ पुनः॥ ॥ २ ॥
- **पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी।**
  कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती॥ ॥ ३ ॥
- **हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वर्योद्वयोः।**
  पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा॥ ॥ ४ ॥
- **उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः।**
  जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिकेऽङ्गुलिमूलके॥ ॥ ५ ॥
- **स्वधा तु प्राणशक्त्यां वा सीमन्यां मस्तके तथा।**
  सर्वाङ्गे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः॥ ॥ ६ ॥
- **पुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु।**
  ऋद्धिः पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा॥ ॥ ७ ॥
- **वाग्भवा सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी।**
  रमा पातु महादेवी पातु माया विराट् स्वयम्॥ ॥ ८ ॥
- **सर्वाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी।**
  विजया पातु भवने जया पातु सदा मम॥ ॥ ९ ॥
- **शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।**
  भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु॥ ॥१०॥
- **त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु।**
  पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु॥ ॥११॥
- **नवदुर्गाः सदा पातु कामाख्या सर्वदाऽवतु।**
  योगिन्यः सर्वदा पातु मुद्राः पातु सदा सम॥ ॥१२॥

- **मात्राः पातु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनी गणाः ।
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ॥** ॥१३॥
- **पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥**

॥ इति विश्वसारतन्त्रे श्रीकमला कवचम् सम्पूर्णम् ॥